विषय : हिंदी द्‌वितीय भाषा (संपूर्ण)

भाषाई कौशल/क्षेत्र : श्रवण **पाठ्‌यक्रम** **कक्षा–सातवीं**

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : ध्वनि/बोली/आवाज/पहचानना। * परिसर के पशु–पक्षियों/प्राणियों की बोली सुनकर पहचानना। * विविध वाद्‌य सामग्रियों की आवाज सुनना और नाम पहचानना।	* परिसर के पशु, पक्षियों, प्राणियों के चित्र। * परिसर के पशु–पक्षियों की बोलियों की सी.डी., डी.वी.डी. * विविध वाद्‌य सामग्रियों के चित्र चार्ट एवं ध्वनियों की सी.डी. * विविध पशु, पक्षी प्राणियों की बोलियों का चार्ट * संदर्भ साहित्य	* परिसर के प्राणियों की बोली आवाज सुनकर पहचानता है। * विविध प्राणियों की ध्वनियों की नकल करता है तथा इससे आनंदित होता है। * परिसर के प्राणियों एवं उनकी आवाजों में साम्य स्थापित करता है। * अलग–अलग प्राणियों की आवाजों की भिन्नता को समझता है। वर्गीकरण एवं विश्लेषण करता है। * परिसर के प्राणियों के प्रति आत्मीयता एवं प्रेमभाव जागृत होता है। * प्राणी संरक्षण की भावना विकसित होती है। * परिसर के पशु–पक्षी, प्राणियों के बारे में आपस में चर्चा करता है। * वाद्‌यों की ध्वनियों से परिचित होता है।	* मौखिककार्य * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * सहपाठी मूल्यांकन

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन– अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
१.	स्फूर्ति गीत, चुटकुले सुनना–सुनाना।	* संदर्भ सामग्री * स्फूर्ति गीतों का चार्ट * चुटकुलों का चार्ट * सी. डी. * डी. वी. डी.	* स्फूर्ति गीत सुनने में आनंद लेता है। * रुचि लेते हुए ध्यानपूर्वक स्फूर्ति गीत, चुटकुले सुनता है। * सुने हुए चुटकुले एवं स्फूर्ति गीतों को दोहराता है। * कक्षा में स्फूर्ति गीत एवं चुटकुले सुनाता है। * तनाव का समायोजन होता है। * आकलनपूर्वक सुनने–सुनाने हेतु प्रवृत्त होता है। * सुनी हुई सामग्री पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देता है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्याक्षिक * निरीक्षण * सहपाठी मूल्यांकन
२.	नीतिकथा, भाषण सुनना–सुनाना। (परोपकार, स्त्री–पुरुष समानता, सहिष्णुता पर आधारित)	* संदर्भ साहित्य * नीति कथा चार्ट * महान विभूतियों के प्रेरक भाषण के चार्ट * महान विभूतियों के भाषण की सी.डी. डी.वी.डी.	* नीति कथा, भाषण सुनने में आनंद लेता है। * ध्यानपूर्वक सुनने की प्रवृत्ति बढ़ती है। * सुनी हुई सामग्री दोहराता है। * नैतिक मूल्यों का विकास होता है। * मन में महान विभूतियों के प्रति आदरभाव बढ़ता है। * महान विभूतियों के बताए हुए सन्मार्ग पर चलने की ओर उन्मुख होता है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन– अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	सार्वजनिक स्थानों के आदेश–निर्देश सूचनाएँ सुनना–सुनाना। (परिसर के संदर्भ में जैसे–विद्यालय, अस्पताल, उद्यान, डाकघर, दर्शनीय स्थल आदि)	* सार्वजनिक स्थानों की सूचनाएँ, आदेश, निर्देश के चार्ट * सी.डी. * डी.वी.डी. * प्रक्षेपक (O.H.P.)	* सार्वजनिक स्थलों की सूचनाएँ, आदेश–निर्देश ध्यानपूर्वक सुनता है। * सुनी हुई सूचनाओं को दोहराता है। * इन सूचनाओं का महत्व समझकर इनके पालन की ओर उन्मुख होता है। * सार्वजनिक स्थानों के प्रति आत्मीयता जागृत होती है। * सार्वजनिक स्थानों की स्वच्छता एवं संरक्षण का भाव विकसित होता है। * जीवन में अनुशासित होने की ओर उन्मुख होता है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
४.	समाचारपत्र, रेडियो, दूरदर्शन, सी.डी., डी.वी.डी. आदि के माध्यम से शिक्षाप्रद कार्यक्रम सुनना–सुनाना (कृषि, नीति, विज्ञान, पर्यावरण संरक्षण, प्रदूषण आदि से संबंधित)	* समाचारपत्र * रेडियो * दूरदर्शन * संगणक * सी. डी. * डी. वी. डी.	* समाचारपत्र, रेडियो, आदि के माध्यम से शिक्षाप्रद कार्यक्रमों को ध्यानपूर्वक सुनने में रुचि लेता है। * सुनी हुई बातों को अन्य विद्यार्थियों को सुनाता है। * उपरोक्त कार्यक्रमों का उचित आकलन करके महत्वपूर्ण बातों को जीवन में उतारने का प्रयास करता है। * पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण निवारण हेतु संलग्न होता है	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * सहपाठी मूल्यांकन

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
५.	कविता, परिच्छेद में आए स्वर, व्यंजन, संयुक्ताक्षर का श्रवण के माध्यम से परिचय प्राप्त करना। (१ से ७५ तक के अंकों को सुनना–सुनाना।)	* संदर्भ साहित्य * कविता, परिच्छेद का चार्ट * अंक चार्ट	* कविता, परिच्छेद में आए हुए स्वर, व्यंजन को ध्यानपूर्वक सुनता है। * कविता, परिच्छेद में आए स्वर, व्यंजन का आकलन करता है। * सुने हुए स्वर, व्यंजन को अन्य विद्यार्थियों को सुनाता है। * स्वर, व्यंजन का वर्गीकरण करता है। * स्वर, व्यंजन की ध्वनियों के अंतर को पहचानता है। * १ से ७५ तक के अंकों को ध्यानपूर्वक सुनता है। * सुने हुए अंकों को विद्यार्थियों को रुचिपूर्वक सुनाता है। * सुने हुए अंकों का व्यवहार में प्रयोग करता है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

भाषाई कौशल/क्षेत्र : भाषण–संभाषण

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन– अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : **'बताओ तो वीर गिनूँ'** (घर परिवेश की वस्तुओं, त्योहार, मेला, कृषि प्रदर्शनी, सर्कस, यातायात के साधन, मौसम, प्रदूषण, पर्यावरण संरक्षण आदि संबंधी नाम। चित्र की पर्चियाँ एक जगह रखना। प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा पर्ची उठाना। जिस विद्यार्थी के हाथ में जो पर्ची आएगी उसके बारे में बताना। वर्णन करना।	* घर–परिवेश की वस्तुएँ, त्योहार, मेला आदि के चित्र एवं नामों की पर्चियाँ	* उत्साहपूर्वक खेल में सहभागी होता है। * अपने हाथ में आई हुई पर्ची के संदर्भ में समझता है, चिंतन, मनन करता है। * अपने हाथ में आई हुई पर्ची पर लिखे नाम या चित्र के बारे में वर्णन करता है। * संभाषण करने हेतु आत्मविश्वास की वृद्धि होती है। * दिए गए विषयों पर चर्चा करने हेतु तत्पर होता है। * वक्तृत्व प्रतियोगिताओं में सहभागी होता है। * सटीक अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित होती है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * सहपाठी मूल्यांकन

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
१.	गाँव, शहर, तहसील के महत्वपूर्ण स्थलों का परिचय बताना।	* मानचित्र, गाँव, शहर, तहसील, जिले के दर्शनीय स्थल, नदियाँ, बाँध, महत्वपूर्ण बातों का चार्ट।	* अपने गाँव, शहर, तहसील के महत्त्वपूर्ण स्थलों के बारे में आपस में चर्चा करता है। * अपने गाँव, शहर के दर्शनीय स्थलों, महत्वपूर्ण बातों का वर्णन करता है। * अपने गाँव, शहर, तहसील के प्रति आत्मीयता का भाव विकसित होता है। * अपना गाँव, शहर स्वच्छ रखने की प्रवृत्ति जागृत होती है। * नदियाँ, बाँध आदि से जल आपूर्ति के संदर्भ में चर्चा करने का आत्मविश्वास जग जाता है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * सहपाठी मूल्यांकन * कक्षाकार्य
२.	विद्यालयीन कार्यक्रम, प्रतियोगिता आदि के बारे में बताना। (राष्ट्रीय त्योहार, शिक्षणोत्सव प्रदर्शनी, शिक्षक दिवस, मलाला दिवस, बालिका दिवस, बाल दिवस आदि) (क्रीडा, वक्तृत्व, कविता पठन, वाचन, कथाकथन आदि प्रतियोगिताएँ)	* चार्ट चित्र फोल्डर छायाचित्र आदि। * संदर्भ साहित्य	* विद्यालयीन कार्यक्रमों एवं, प्रतियोगिता के बारे में चर्चा करता है। * विद्यालयीन कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं का वर्णन करता है। * वक्तृत्व, कथाकथन आदि प्रतियोगिताओं में सहभागी होता है। * संभाषण एवं मौखिक अभिव्यक्ति क्षमता विकसित होती है। * आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। * सकारात्मक स्पर्धा की भावना का विकास होता है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	नाट्यांश की मौखिक प्रस्तुति। * प्रसंग, घटना, समारोह से संबंधित, बातों पर चर्चा, नाट्यांश की मौखिक प्रस्तुति एवं चर्चा (ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक घटनाओं का तथा कहानी का मौखिक नाट्य रूपांतरण आदि। * दिए गए विषय पर भाषण करना। * जैसे–जलप्रदूषण, वृक्षारोपण, अनुशासन, स्वच्छता अभियान, जल बचाओ अभियान	* प्रसंग घटना आदि संबंधी चार्ट * संदर्भ साहित्य	* नाट्यांश पर चर्चा करता है। * नाट्यांश की प्रस्तुति एवं प्रश्नोत्तर पर चर्चा करता है। * दिए गए विषय पर भाषण की तैयारी करने हेतु संदर्भ साहित्य का उचित प्रयोग करता है तथा सुचारू भाषण करने के लिए प्रेरित होता है। * भाषण, वार्तालाप के लिए साहस, आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। * भाषण प्रतियोगिता में सहभागी होता है। * भाषण, वार्तालाप में उद्धरण, मुहावरे, सुवचन आदि के 'प्रयोग' करने की ओर उन्मुख होता है।	* प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
४.	गीत, कहानी की अभिनय एवं लय तथा उचित गति के साथ प्रस्तुति। १ से ७५ तक के अंकों की मौखिक प्रस्तुति।	* गीत संग्रह, कहानी संग्रह सी.डी., डी.वी.डी, ध्वनिफीत अंक एवं अंकों का अक्षरों में चार्ट। * संदर्भ साहित्य	* सहअभिनय गीत–कहानी की प्रस्तुति में आनंद लेता है। * गीत–कहानी की उचित हाव–भाव, लय–ताल के साथ प्रस्तुति करता है। * कहानी के पात्रों के साथ सामंजस्य प्रस्थापित करता है। * तनावमुक्त होता है। * सम अनुभूति होती है। * आत्मविश्वास में वृदधि होती है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* १ से ७५ तक के अंकों का सही उच्चारण करता है। * भाषण प्रतियोगिता में भाग लेता है।	
५.	औपचारिक/अनौपचारिक बातचीत में मानक उच्चारण करना (अनुनासिक, अनुस्वार, स्वर, संयुक्ताक्षर, विसर्ग, विशेष वर्ण, विराम चिह्न, कारक आदि के संदर्भ में)	* अशुद्ध एवं शुद्ध शब्दों के चार्ट। * विरामचिह्न आदि के चार्ट। * ध्वनिफीत * सी.डी., डी.वी.डी आदि।	* मानक उच्चारण से अवगत होता है। * औपचारिक/अनौपचारिक बातचीत में मानक उच्चारण करता है। * संभाषण में वर्णों एवं शब्दों का शुद्ध उच्चारण करने की ओर प्रवृत्त होता है। * औपचारिक/अनौपचारिक संभाषण करते समय विरामचिह्नों एवं कारक चिह्नों का उचित प्रयोग करता है। * उचित आरोह-अवरोह, तान-अनुतान के साथ संभाषण करता है। * निडरता के साथ संभाषण करने की क्षमता विकसित होती है। * आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। * सार्वजनिक स्थानों पर संभाषण करने हेतु प्रवृत्त होता है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : 'चलो शब्दों के गाँव' अलग–अलग बच्चों के गले में वर्ण कार्ड लटकाकर, फिर उन्हें मिलाकर अर्थपूर्ण शब्द बनाना तथा उनका वाचन करना।	✻ वर्ण कार्ड ✻ शब्द चार्ट	✻ भाषाई खेल में रुचि लेता है। ✻ खेल के माध्यम से वर्ण एवं शब्द वाचन क्षमता का विकास होता है। ✻ कौतूहल जागृत होता है। ✻ शब्द संपदा में वृद्धि होती है।	✻ प्रात्यक्षिक ✻ निरीक्षण ✻सहपाठी मूल्यांकन
१.	कविता,शौर्यकथा का वाचन करना।		✻ कविता वाचन में रुचि लेता है। ✻ हाव–भाव, लय–ताल के साथ वाचन करता है। ✻ तनाव कम होता है। ✻ आनंद के साथ शौर्यकथा का वाचन करता है। ✻ हाव–भाव, उचित आरोह–अवरोह के साथ शौर्यकथा कहता है। ✻ कथा के पात्रों के साथ समन्वय स्थापित करता है। ✻ सम अनुभूति होती है। ✻ भावनाओं का समायोजन होता है। ✻ साहस एवं निर्णय क्षमता में वृद्धि होती है। ✻ वाचन प्रतियोगिता में भाग लेता है।	✻ मौखिककार्य ✻ कृति ✻ प्रात्यक्षिक ✻ कक्षाकार्य ✻ सहपाठी मूल्यांकन ✻ स्वाध्याय

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
२.	ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी का प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप में वाचन करना।	* ऐतिहासिक स्थलों की प्रतिकृति, चार्ट। * ऐतिहासिक स्थलों की सूचनाओं का चार्ट * ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी के चार्ट * मानचित्र * महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों के चित्र तथा महापुरुषों के चित्र	* ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी/सूचना प्रत्यक्ष देखकर वाचन करता है। * ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी/सूचनाओं का अप्रत्यक्ष रूप से प्रतिकृति, चार्ट की मदद से वाचन करता है। * अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति आदरभाव एवं आत्मीयता जागृत होती है। * ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण की भावना विकसित होती है। * उचित हाव-भाव, आरोह-अवरोह के साथ वाचन क्षमता का विकास होता है। * आदर्श वाचन प्रतियोगिता में सहभागी होता है। * आत्मविश्वास में वृद्धि एवं निर्णय क्षमता में विकास होता है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * प्रकल्प
३.	घटना, प्रसंग, त्योहारों के बारे में उपलब्ध जानकारी का वाचन करना। जैसे- (भूकंप, बाढ़, प्रदूषण, दुर्घटना, महिला दिवस, महाराष्ट्र दिवस, गणतंत्र दिवस आदि)	* संदर्भ साहित्य समाचार पत्र बाल पत्रिकाओं की कतरनें।	* घटना, प्रसंग, त्योहारसंबंधी जानकारी का वाचन करता है। * जानकारी का उचित लय-ताल, आरोह-अवरोह के साथ वाचन करता है। * विरामचिह्नों के अनुसार स्पष्ट एवं शुद्ध वाचन की ओर उन्मुख होता है। * वाचन के संबंध में रुचि जागृत होती है। * वाचन स्पर्धा में सहभागी होते हुए आदर्श वाचन की ओर अग्रसर होता है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * प्रकल्प

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* शब्द संपत्ति का विकास होता है। * आपदा व्यवस्थापन के प्रति जागृत होता है।	
४.	विरामचिह्नों सहित आरोह–अवरोह के साथ संवाद, कथा आदि का वाचन करना। १ से ७५ तक के अक्षरों में लिखें अंकों का वाचन करना।	* विराम चिह्न, संयुक्त परिच्छेद का चार्ट। * विराम चिह्नोंसहित संवाद, कथा का चार्ट। * अक्षरों में लिखे अंकों का चार्ट।	* विराम चिह्नयुक्त संवाद, कथा के वाचन में रुचि लेता है। * उचित आरोह–अवरोह के साथ वाचन करता है। * शुद्ध वाचन की ओर प्रवृत्त होता है। * वाचन के संदर्भ में विद्यार्थी का आत्मविश्वास बढ़ता है। * वाचन स्पर्धा में सहभागी होता है। * पाठ्येतर साहित्य पढ़ने में रुचि बढ़ती है। * अक्षरों में लिखे अंकों का वाचन करता है। * इन अंकों का व्यावहारिक जीवन में उपयोग करता है। * शब्द संपदा का विकास होता है। * पूछे गए छोटे–छोटे प्रश्नों के उत्तर देता है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
५.	पूरक पठन साहित्य का मौन वाचन, मुखर वाचन, अनुवाचन करना। (मुखर वाचन (प्रकट वाचन) तथा मौन वाचन के अंतर को समझना तथा उनकी बारीकियों से अवगत होना।)	* पूरक पठन साहित्य	* पूरक पठन साहित्य का मौन वाचन करता है। * पाठ्येतर साहित्य पढ़ने की रुचि बढ़ती है। * आकलन क्षमता का विकास होता है। * पठित साहित्य पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देता है। * अवधान क्षमता का विकास होता है। * शब्द संपत्ति में वृद्धि होती है। * अनुवाचन, मुखर वाचन एवं मौन वाचन के अंतर एवं विशेषताओं से अवगत होता है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

भाषाई कौशल/क्षेत्र: लेखन

कक्षा–सातवीं

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : **'देखो, झाँकी वाक्यों की'** शब्द कार्डों के शब्दों का सही क्रम लगाकर अर्थपूर्ण वाक्य बनाना। जैसे – [लड़का] [अन्नदाता] [है] [हैं] [समय] [काल] [भी] [ही] [संपत्ति] [किसान] उत्तर : [समय] [ही] [संपत्ति] [है।] इसी तरह अन्य वाक्य बनवाए जाएँ।	* शब्द कार्ड्स, श्याम पट्ट	* खेल में रुचि लेता है। * आनंदपूर्वक अर्थपूर्ण वाक्य बनाकर लिखता है। * खेल के माध्यम से तनाव का समायोजन होता है। * रचनात्मकता की ओर उन्मुख होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
१.	अनुलेखन, सुलेखन करना। (वाक्य, परिच्छेद)	* वाक्य पट्टी, घोष वाक्य, सुवचन की वाक्य पट्टियाँ, परिच्छेद चार्ट * संदर्भ साहित्य,	* अनुलेखन, सुलेखन करता है। * सुडौल और सुपाठ्य लेखन की ओर अग्रसर होता है। * शुद्ध लेखन की ओर उन्मुख होता है। * नए–नए शब्दों से परिचित होता है। * उचित विराम चिह्नों का उपयोग करता है। * सुव्यवस्थित लेखन की ओर प्रवृत्त होता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * सहपुस्तक कसौटी
२.	शुद्ध लेखन, श्रुत लेखन करना– (कविता, कहानी आदि) * अंकों का क्रमिक लेखन करना।	* चित्र कार्ड * अंक चार्ट	* कहानी, कविता का शुद्ध लेखन, श्रुतलेखन करता है।	* कृति * स्वाध्याय * कक्षाकार्य * प्रकल्प

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* अपने भावों, विचारों को लिखित रूप में अभिव्यक्त करने हेतु प्रवृत्त होता है। * भावनाओं का समायोजन होता है। * देवनागरी हिंदी में १ से ७५ तक के अंकों का शुद्ध लेखन करता है। * अक्षरों में लिखे अंकों का अपने लेखन में उपयोग करता है।	
३.	विरामचिह्न, कारक चिह्नयुक्त लघु परिच्छेद लेखन करना।	* विराम चिह्नों कें संकेत कार्ड * कारक एवं उनके नाम तथा चिह्नों के चार्ट	* विराम चिह्नों एवं कारक चिह्नों का प्रयोग करते हुए परिच्छेद लेखन करता है। * विराम चिह्नों एवं कारक विभक्तियों से परिचित होता है। * शुद्ध एवं वर्तनी के अनुसार लिखने हेतु प्रवृत्त होता है। * निर्णय क्षमता का विकास होता है।	* लेखन कार्य * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * स्वाध्याय * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * सहपुस्तक कसौटी

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
४.	गद्य आकलन- (गद्य : पठित-अपठित)	* चार्ट * परिच्छेद * संदर्भ साहित्य	* दिए गए गद्यांश का वाचन करता है। * दिए गए गद्यांश का आकलन करता है। * आकलन के आधार पर कब, कहाँ, क्यों से शुरू होने वाले प्रश्नों का उत्तर लिखता है। * वाक्यरचना की क्षमता का विकास होता है। * आकलन करते समय विश्लेषण कौशल का विकास होता है। * पर्यायवाची शब्दों के प्रयोग से शब्द संपदा में वृद्धि होती है।	* निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन * उपक्रम
५.	स्वयं प्रेरणा से मुद्दों के आधार पर घरेलू पत्र, कहानी, निबंध लेखन करना।	* कहानी, निबंध, पत्र के मुद्दों के चार्ट। * संदर्भ साहित्य	* स्वयं प्रेरणा से मुद्दों के आधार पर पत्र, कहानी, निबंध का लेखन करता है। * कहानी, निबंध आदि के माध्यम से अपने भावों को लिखित रूप में अभिव्यक्त करने हेतु अग्रसर होता है। * लेखन में मुहावरों का उचित प्रयोग करता है। * कहानी, निबंध आदि के लेखन में विरामचिह्नों एवं कारक चिह्नों का उपयोग करता है। * सृजनशीलता एवं रचनात्मक क्षमता का विकास होता है। * लेखन में सुवचन, घोष वाक्य आदि का प्रयोग करता है।	* कक्षाकार्य * स्वाध्याय * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * सहपुस्तक कसौटी

भाषाई कौशल/क्षेत्र : क्रियात्मक व्याकरण **कक्षा–सातवीं**

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : 'चलो नाम के गाँव' कृति – श्यामपट्ट/चार्ट पर सभी बच्चों के नाम लिखकर उनमें से उपसर्ग और प्रत्ययवाले नाम अलग करना। नाम का अर्थ बताना। उदा. सुयश, विजय, नम्रता, वरदा।	* नाम का चार्ट * उपसर्ग एवं प्रत्यय का चार्ट	* रुचि लेते हुए खेल में सहभागी होता है। * नाम में आए हुए उपसर्ग/प्रत्यय को पहचानता है। * अपने नाम का अर्थ जानते हुए प्रसन्न होता है। * खेल के माध्यम से तनाव का समायोजन होता है। * उपसर्ग/प्रत्ययवाले नए – नए नामों से परिचित होता है। * शब्द संपदा में वृद्धि होती है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
१.	**पुनरावृत्ति :** * शब्दयुग्म, शब्दभेद (स्थूल परिचय) मुहावरे, क्रिया के काल का प्रयोग–(सामान्य–परिचय), वर्तनी, विराम चिह्न आदि।	* शब्दयुग्म चार्ट, क्रिया–काल के चार्ट। विराम चिह्न चार्ट आदि। * संदर्भसाहित्य	* पिछली कक्षा में पढ़े हुए शब्दयुग्म, शब्दभेद, मुहावरे, क्रिया के काल, विराम चिह्न आदि का प्रयोग करता है। * भाषा के विविध व्याकरणिक प्रयोगों से अवगत होता है। * शुद्ध एवं मानक रूप में भाषण–संभाषण, वाचन–लेखन की ओर प्रवृत्त होता है। * भाषा प्रयोग के स्तर पर आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।	* मौखिककार्य * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * सहपाठी मूल्यांकन * कक्षाकार्य * स्वाध्याय

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन- अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	✻ शब्दभेद की जानकरी प्राप्त करना (विकारी शब्द-संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया उपभेंदों सहित)	✻ संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया के उपभेंदों सहित चार्ट। ✻ विकारी शब्दों से युक्त वाक्य पट्टियाँ। ✻ विकारी शब्दों से युक्त परिच्छेद चार्ट।	✻ विकारी शब्दों (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया) से परिचित होता है। ✻ सामान्य बातचीत में विकारी शब्दों का उचित प्रयोग करता है। ✻ अपने लेखन में विकारी शब्दों का उचित प्रयोग करता है। ✻ हिंदी भाषा-संरचना एवं उसके प्रयोग से अवगत होता है। ✻ विश्लेषण एवं वर्गीकरण की क्षमता विकसित होती है।	✻ प्रात्यक्षिक ✻ निरीक्षण ✻ कृति ✻ मौखिककार्य ✻ कक्षाकार्य ✻ स्वाध्याय ✻ सहपाठी मूल्यांकन
२.	✻ शब्दों के लिंग, वचन का परिवर्तन एवं उचित प्रयोग करना। ✻ रचनानुसार वाक्य के प्रकारों का उपयोग करना।	✻ रचनानुसार वाक्य प्रकार का चार्ट ✻ पुल्लिंग, स्त्रीलिंग शब्दों का चार्ट/सूची ✻ एकवचन, बहुवचन शब्दों के चार्ट/सूची ✻ शब्दों के लिंग, वचन परिवर्तन के चार्ट।	✻ शब्दों के लिंग, वचन से अवगत होता है। ✻ संभाषण एवं लेखन में शब्दों के उचित लिंग, वचन का प्रयोग करता है। ✻ शब्दों के लिंग और वचन का प्रयोग करता है। ✻ शब्दों के लिंग और वचन का परिवर्तन करते हुए संभाषण एवं लेखन में उचित प्रयोग करता है। ✻ वाक्यों के प्रकारों (रचनानुसार) से अवगत होता है।	✻ कृति ✻ प्रात्यक्षिक ✻ निरीक्षण ✻ कक्षाकार्य ✻ स्वाध्याय ✻ सहपाठी मूल्यांकन ✻ सहपुस्तक कसौटी ✻ प्रकल्प

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* संभाषण एवं लेखन में रचनानुसार वाक्यों के प्रकारों का उचित प्रयोग करता है। * शब्दों के विविध रूपों से परिचित होकर व्यवहार में उनका प्रयोग करता है। * विश्लेषण और वर्गीकरण की क्षमता विकसित होती है। * शुद्ध एवं मानक लेखन की ओर प्रवृत्त होता है।	
३.	काल के भेदों का प्रयोग करना। (सामान्य, अपूर्ण, पूर्ण)	* कालभेद के चार्ट, काल के भेदों के अनुसार वाक्य पट्टियाँ।	* काल एवं उनके उपभेदों से अवगत होता है। * भाषण-संभाषण लेखन में काल एवं उनके भेदों का प्रयोग करता है। * काल के भेदों से परिचित होता है। * भाषण-संभाषण और लेखन में उचित काल के प्रयोग की ओर अग्रसर होता है। * वर्गीकरण एवं विश्लेषण की क्षमता विकसित होती है।	* निरीक्षण * स्वाध्याय * कक्षाकार्य * सहपुस्तक कसौटी
४.	विरामचिह्न, संयोजक चिह्न, विवरण चिह्न, कोष्ठक चिह्न का उपयोग करना।	* विरामचिह्न संकेत एवं नाम के चार्ट। * विरामचिह्नरहित वाक्य पट्टियाँ। * विरामचिह्न रहित अनुच्छेद चार्ट।	* विरामचिह्न, संयोजक चिह्न, विवरण चिह्न, कोष्ठक चिह्न से अवगत होता है। * लेखन में विराम चिह्नों का उचित प्रयोग करता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यमापन * सहपुस्तक कसौटी

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			❊ विरामचिह्नों के अनुसार उचित हाव–भाव, आरोह–अवरोह के साथ संभाषण एवं वाचन करता है। ❊ विश्लेषण क्षमता का विकास होता है। ❊ अनुशासित, नियोजित, क्रमबद्‌ध जीवन जीने के लिए प्रवृत्त होता है।	
५.	वर्तनी के अनुसार शुद्‌ध लेखन करना। (शुद्‌ध शब्द, कारक चिह्नों का सही प्रयोग विराम चिह्न आदि।)	❊ शब्द चार्ट ❊ संज्ञा के साथ कारक चिह्नों के चार्ट। ❊ सर्वनाम के साथ कारक चिह्नों के प्रयोग के चार्ट। ❊ विराम चिह्नों के चार्ट।	❊ शब्दों के मानक रूप से परिचित होता है। ❊ संभाषण वाचन लेखन में शब्दों के मानक रूपों का प्रयोग करता है। ❊ कारक चिह्नों के उचित प्रयोग से अवगत होता है। ❊ संभाषण, वाचन, लेखन में संज्ञा और सर्वनाम के साथ कारक विभक्ति का उचित उपयोग करता है। ❊ वर्तनी के नियम समझते हुए विरामचिह्न युक्त शुद्‌ध लेखन करता है। ❊ निर्दोष लेखन की ओर प्रवृत्त होता है। ❊ उचित आरोह–अवरोह के साथ वाचन करता है। ❊ अनुशासन की प्रवृत्ति विकसित होती है।	❊ कृति ❊ कक्षाकार्य ❊ स्वाध्याय ❊ सहपाठी मूल्यांकन ❊ सह पुस्तक कसौटी

भाषाई कौशल/क्षेत्र : व्यावहारिक सृजन **कक्षा–सातवीं**

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : **'सलाम–नमस्ते'** (विद्यार्थियों के दो गुट बनाना। एक गुट द्वारा नमस्ते, प्रणाम, आशीष, स्वागत, सलाम, सैल्यूट, आदि कृतियाँ करना।	* 'सलाम–नमस्ते' के चार्ट	* सलाम–नमस्ते खेल में विद्यार्थी रुचि लेता है। * खेल–खेल में सादर प्रणाम, नमस्ते आदि कृतियाँ करता है और उन कृतियों का महत्व समझता है। * बड़ों के प्रति आदरभाव समवयस्कों के प्रति मित्रता की भावना विकसित होती है। * सुसंस्कारित होता है। * भारतीय सांस्कृतिक विरासत से अवगत होता है। * सर्वधर्म समभाव विकसित होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण
१.	**अनुवाद :** मातृभाषा के विज्ञापन और परिच्छेदों का हिंदी में अनुवाद करना। (मौखिक एवं लिखित)	* संदर्भ साहित्य * मातृभाषा के विज्ञापनों की वाक्य पट्टियाँ और चार्ट * विज्ञापन परिच्छेद का चार्ट	* मातृभाषा के विज्ञापनों एवं परिच्छेदों का मौखिक एवं लिखित अनुवाद करता है। * मौखिक एवं लिखित अनुवाद में रुचि लेता है। * मातृभाषा और हिंदी में सहसंबंध स्थापित करता है। * मातृभाषा एवं हिंदी की विशिष्ट बातों में समानता एवं भिन्नता से परिचित होता है। * मातृभाषा के साथ–साथ हिंदी के प्रति आदरभाव विकसित होता है।	* कक्षाकार्य * स्वाध्याय

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
२.	**व्यावसायिक लेखन –** घोषवाक्य एवं विज्ञापन लेखन करना। (कृषि तथा अन्य व्यावसायिक क्षेत्रों से संबंधित)	कृषि संबंधी एवं परिसर के अन्य व्यवसायियों के चित्र चार्ट विज्ञापन एवं घोषवाक्य की पट्टी	* विद्यार्थी परिसर के कृषक एवं अन्य व्यवसायियों का परिचय प्राप्त करता है। * उनके व्यवसाय के बारे में चर्चा करता है। * उपरोक्त व्यवसायों के बारे में विज्ञापन एवं घोष वाक्य लेखन करता है। * आकर्षक एवं प्रभावी विज्ञापन बनाने हेतु समुचित शब्दों के प्रयोग की क्षमता विकसित होती है। * कृषक एवं अन्य व्यवसायियों से सहसंबंध स्थापित करता है। * कृषक एवं अन्य व्यवसायियों के प्रति आदरभाव एवं आत्मीयता पैदा होती है। * अपने भावी जीवन के व्यवसाय के प्रति उन्मुख होता है। * सृजनात्मक क्षमता का विकास होता है। * आत्मविश्वास एवं निर्णय क्षमता में वृद्धि होती है। * घोषवाक्य, व्यवसायियों की जानकारी की कतरनों का संग्रह करता है। * समय–समय पर उसका लेखन में प्रयोग करता है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन * प्रकल्प

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	**नाट्यकला :** मंचीय जानकारी प्राप्त करना। मंचीय व्यवस्थापन संबंधी विभिन्न गतिविधियों की साभिनय प्रस्तुति करना।	* मंच का चित्र * चार्ट * मंचीय विषयों की नामसूची * कथा चार्ट * संदर्भ साहित्य	* मंचीय जानकारी प्राप्त करने में रुचि लेता है। * परिसर के परिचित नाटककार, बाल कलाकार, कलाकार आदि से चर्चा करके जानकारी प्राप्त करता है। * मंच से संबंधित बातों की जानकारी प्राप्त करता है। * मंच के व्यवस्थापन संबंधी विषयों का आनंद के साथ अभिनय करता है। * छोटी-छोटी कहानियों का संवादों में रूपांतरण करता है। * आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। * निर्णयक्षमता का विकास होता है। * कलाकारों के प्रति आत्मीयता बढ़ती है। * व्यवसाय चयन के हेतु अग्रसर होता है। * देखे हुए सांस्कृतिक, विविध गुणदर्शन कार्यक्रम पर चर्चा करता है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * सहपुस्तक कसौटी * स्वाध्याय * प्रकल्प
४.	**लिप्यंतरण :** विज्ञापनों का रोमन (अंग्रेजी) लिपि में लेखन करना। अंग्रेजी विज्ञापनों का देवनागरी (हिंदी) में लेखन करना।	* विज्ञापन चार्ट * समाचारपत्र के विज्ञापन * अंग्रेजी विज्ञापनों के चार्ट, पट्टियाँ	* हिंदी विज्ञापनों का रोमन लिपि में लेखन करता है। * अंग्रेजी विज्ञापनों का देवनागरी लिपि में लेखन करता है। * लिपि परिवर्तित करके लिखने में रुचि लेता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन * उपक्रम

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			✲ हिंदी भाषा के प्रति आत्मीयता उत्पन्न होती है। ✲ निर्णयक्षमता का विकास होता है। ✲ व्यवसाय वृद्धि में विज्ञापनों के महत्व को समझता है। ✲ लिपि परिवर्तन में भाषा की वर्तनी को समझते हुए परिवर्तन करता है।	✲ प्रकल्प
५.	**सांकेतिक चिह्न** मुद्रित शोधन चिह्नों का पुनरावर्तन ✲ शब्दों के लघुरूप ✲ पुलिस, सेना, स्काउट गाइड, पथ सुरक्षा दल, राष्ट्रीय छात्र सेना आदि के सांकेतिक चिह्नों का लेखन।	✲ मुद्रित शोधन के चिह्न एवं नामों के चार्ट ✲ पुलिस, सेना, स्काऊट, गाईड, पथ सुरक्षा दल, राष्ट्रीय छात्रसेना के चिह्न एवं नामों के चार्ट	✲ मुद्रित शोधन चिह्नों का पुनरावर्तन करता है। सहपाठी द्वारा लिखित कार्य में सुधार हेतु उपयोग करता है। ✲ शब्दों के लघुरूपों (संक्षिप्त) से अवगत होता है। ✲ सांकेतिक चिह्न एवं उनके नामों से परिचित होता है। ✲ राष्ट्रीयता एवं आत्मीयता का भाव जागृत होता है। ✲ अपने भावी जीवन के व्यवसाय के प्रति रुझान पैदा होता है। ✲ अपनी पाठशाला एवं परिसर का मानचित्र बनाने हेतु प्रारूप बनाता है। ✲ कक्षा स्तर पर सांकेतिक चिह्न बनाकर उनका उपयोग करता है। ✲ सर्जनशीलता का विकास होता है।	✲ प्रात्यक्षिक ✲ निरीक्षण ✲ कक्षाकार्य ✲ सहपाठी मूल्यांकन ✲ प्रकल्प